प्रथम अध्याय

" 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का कथावस्तुगत अध्ययन "

प्रथम अध्याय

विवेच्य उपन्यास का कथावस्तुगत अध्ययन

प्रास्ताविक :-

कथानक को उपन्यास का सर्वप्रमुख तत्त्व स्वीकार किया गया हैं। कथानक का अपने विशिष्ट अर्थ में अभिप्राय है, '' साहित्य के कथात्मक रूपों, लोककथा, महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि का वह तत्त्व जो उनमें वर्णित कालक्रम से श्रृंखलित घटनाओं को रीढ़ की हड्डी की तरह दृढ़ता देकर गति देता है, और जिसके चारों ओर घटनाएँ बेल की भांति उगती, बढती और फैलती है।'' [1]

लेखक अपनी रूचि और मन में स्थित उद्देश्य के अनुसार इतिहास, पुराण जीवनी, वर्ग - विषमता, शोषण, रूढियाँ, परंपराएँ, आधुनिक समाज जीवन के बदलाव आदि विषयों से संबंधित कथानक चुनता है। कथावस्तु जीवन के कई अंगों से संबंधित विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों पर आधारित होती है।

प्रेमचन्द उपन्यास के कथानक के स्त्रोत के सम्बन्ध में लिखते हैं, '' अगर लेखक अपनी आँखें खुली रखे, तो उसे हवा से भी कहानियाँ मिल सकती हैं। रेलगाडी में, नौकाओं पर, समाचारपत्रों में, मनुष्य के वार्तालापों में और हजारों जगहों में सुन्दर कहानियाँ बनाई जा सकती है। ..... उपन्यासों के लिए पुस्तकों से मसाला न लेकर जीवन से ही लेना चाहिए। '' [2] अर्थात जीवन में स्थित घटनाओं का प्रतिबिंब ही उपन्यासों की कथावस्तु में निहित होता हैं।

इस प्रकार यह निश्चित है कि संसार का एक भी उपन्यास अथवा साहित्यिक रचना कथानक से मुक्त नहीं होती हैं। पाठकों के मन में आदि से अंत तक उत्सुकता बनाये रखने के लिए कथावस्तु में विश्वसनीयता, कार्यकारण संबंध, संघर्ष तथा उत्कंठा होती है। वास्तव में उपन्यासकार की कुशलता इसी में है कि उसके कथानक की समस्त घटनाएँ एक सूत्र में पिरोई हुई प्रतीत हो तथा वह उनमें ऐसी तर्कसंगति बैठाए कि उनमें कार्य कारण श्रृंखला स्थापित हो सके।

हिंदी के अंतिम दशक के उपन्यासो में कथावस्तुगत अनेक प्रयोग किये गये हैं, मुख्य कथा के साथ अनेक गौण कथाओं का बिखराव देखने को मिलता है, जिससे मुख्य कथा कहाँ खो गयी है, इसे तलाशना पडता है। हर पात्र अपनी अलग - अलग कथा लेकर उपन्यास में उतरता है और इससे मुख्य कथा गुम होती जाती है।

इसी पृष्ठभूमि पर हम अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन प्रस्तुत करेंगे -

1.1 मुख्य कथा

'मुखड़ा क्या देखे' सन 1996 में प्रकाशित अब्दुल बिस्मिल्लाहजी का पाचवाँ उपन्यास है। 'मुखड़ा क्या देखे' बिस्मिल्लाहजी का प्रयोगों का अच्छा नगमा पेश करनेवाला उपन्यास है।

'मुखड़ा क्या देखे' इस उपन्यास में इलाहाबाद के समीप स्थित बलापुर गाँव को केन्द्र में रखकर कथावस्तु का विवेचन किया है।

बलापुर में रामवृक्ष पाण्डे नाम के ब्राह्मण जमींदार है, उनके घर उनकी बेटी लता की शादी की तैयारीयाँ चल रही है। लता की शादी की तैय्यारीयों का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं - " स्त्रियों का गाना पूर्ववत जारी था और रामवृक्ष पाण्डे अपने विचारों में खोए बारात की तैयारी देख रहे थे। सामने का भुसौला खाली कर दिया गया था। वहाँ गँडासों से कटहल और कोंहडे काटे जा रहे थे। पास ही बडे - बडे कड़ाहे रखे हुए थे। हलवाई मिठाई बनाने में लगे हुऐ थे। स्त्रियाँ पूडियाँ बेल रही थीं। गाँव का कोंहार परई - पुरवा लिए बैठा था। मुसहर पतलें ले आया था। सिपाही नाऊ बच्चों के बाल बना रहा था। " [3] रामवृक्ष पाण्डे गाँव का राजा तो नहीं था, किन्तु गाँव में शासन उन्हीं का था। उनकी बिटिया की शादी में सारी प्रजा उपस्थित हुई। निजी कारणों से गाँव का अली अहमद मुसलमान चुड़िहार उपस्थित नहीं हुआ, इसमें रामवृक्ष पाण्डे ने अपनी तौहीन समझी। उन्होंने निश्चय किया " इस अल्ली चुड़िहार को मैंने दर - दर का भिखारी न बना दिया तो मेरा नाम रामवृक्ष पाण्डे नहीं रमुआ चमार होगा। " [4] यहाँ गाँव में सांप्रदायिक एवं जातीय भेदाभेद के दर्शन होते हैं। आज की राजनीति ने ये दीवारें और भी बढा दी हैं।

पं. रामवृक्ष पाण्डे नेहरू - विरोधी और पटेलवादी विचारों के पक्षधर हैं। स्वाधीनता के बाद देश की जनता खुशी से गीत गा रही थी और दूसरी ओर पं. रामवृक्ष पाण्डे जैसे लालची जमींदार दुःखी थे। उसके दुःख का कारण एक ओर अल्ली अहमद था तो दूसरी ओर जमींदारी में लगान की जो वसूली होती थी, उसका एक हिस्सा लालमुँहे बंदरों के उदर में चला जाता था। यहाँ पं. रामवृक्ष पाण्डे की स्वार्थलोलुपता तथा देश के प्रति हीनभावना के दर्शन होते हैं। पाण्डे जैसे गाँव जीवन में आज भी अनेक भेडिये हैं जो गाँव के सामान्य लोगों का शोषण करते हैं।

बलापुर में मुसलमानों के कुल पाँच घर थे, जिनमें एक चुडिहार का और शेष चार घर तुर्कों के थे। अली अहमद अपनी पत्नी रनिया के साथ चूडियाँ पहनाने का काम करता है, एक दिन रनिया के पेट में दर्द होने लगता है, ऐसे समय अली अहमद अपनी भउजी को मदद के लिए पुकारता है, मगर उधर से कोई आवाज नहीं आती। अली अहमद सत्तार के घर की ओर चल पडता है। सत्तार की अम्माँ जच्चा बच्चा के मामलों में काफी अनुभवी भी हैं। सत्तार की अम्माँ ने आते ही अली अहमद की भउजी को जगाया और उस पर बरस पडी। उसी रात रामवृक्ष पाण्डेजी के यहाँ नाच - नौटंकी का आयोजन किया था। अली अहमद के घर में उसकी भउजी, सत्तार की अम्माँ तथा फुल्ली दाई इन तीनों स्त्रियों ने रनिया की सहायता करके इस अवस्था से उसे सुव्यवस्थित रूप से खतरे से बाहर निकाल दिया। अली अहमद को बेटा हुआ। " लडका हुआ है। ई मोटा। भउजी ने हाथ के इशारे से

बताया तो अली अहमद लजा गया। " [5] इस प्रसंग से घर का नजारा बदल गया था। अली अहमद और भउजी के परिवार के बीच की कटुताएँ, शत्रुताएँ कम हो गई। ग्रामीण जीवन के एक - दुसरें की मदद करने की स्थिति के दर्शन यहाँ होते हैं।

अली अहमद लडका पैदा होने के बाद रनिया के कहने पर घरखर्चा के लिए रामवृक्ष पाण्डेजी के यहाँ कर्जा लेने के लिए गया मगर वहाँ पाण्डेजी बीना बात किये ही अली अहमद को मारने - पीटने लगे। अँग्रेजों की नीति का अनुकरण ग्रामीण जमींदार करते हैं। पाण्डेजी इसके लिए अपवाद नहीं थे। पं. रामवृक्ष पाण्डे अँग्रेजों के चले जाने के बाद भी उनकी नीति का उपयोग करते हैं। अली अहमद घर न जाकर सत्तार के अब्बा के पास जाता हैं। " जैसे पशु - पक्षी दूसरे पशु - पक्षियों को अपना हितैषी समझते हैं, उसी प्रकार एक मुसलमान सहज ही दूसरे मुसलमान को अपना शुभाकांक्षी मान लेता है। " [6] लेकिन मौलवी साहब में कुछ परिवर्तन नहीं दृष्टिगोचर होता वे भी अली अहमद की बात झूठ तथा पं. रामवृक्ष पाण्डेजी की बात को सही समझते हैं। अली चुडिहार अपनी शिकायत को लेकर पंडित जवाहरलालजी से मिलने के लिए इलाहाबाद जाता है लेकिन वे भी नहीं मिलते। नेहरूजी के न मिलने के कारण पराजित मन से अली अहमद पुनः बलापुर लौटता है।

ग्रामीण जीवन में जनसामान्य औरतों की इज्जत को लूटनेवाले अनेक धनाढ्य होते हैं। पं. सृष्टिनारायण इन्ही में से एक हैं। वे रामकली की इज्जत लूटते हैं। इस खबर को सुनकर अली भी चिंतित रहता है। अली अहमद को लगता है कि फुल्ली दाई की नन्हीं सी नातिन पर लोगों की नियत बिगडती है, तो अपनी पत्नी रनिया पर क्यों नहीं बिगडेगी। इस डर से अली अपने परिवार के साथ बलापुर छोडकर शहपुरा आता है। यहाँ उसकी भेंट नुरू से होती है। नूरू की मदद से वह दुल्लोपुर आता है। दुल्लोपूर में पतरस की मदद से वही रहके काम - धन्धा करता है। यहाँ पतरस अली अहमद को धर्म परिवर्तन करने की बात कहता है। लेकिन अली तथा रनिया बेटे बुद्धू की, शिक्षा के संबंध में धर्मपरिवर्तन का विरोध करते हैं। यहाँ नारी असुरक्षा के कारण स्थलांतर की समस्या और धर्मपरिवर्तन की बदली हुअी हवा के दर्शन होते हैं।

दुल्लोपुर में जलील और खलील नाम के दो मुसलमान भाईयों का परिवार भी आता है और दोनो परिवार मिलकर वहाँ जंगल में खेत बनवाते हैं। इसी दौरान अली अहमद धार्मिक कार्य करने लगता है। तभी अली अहमद की बीवी लडकी को जन्म देती है। जिसका नाम ताहिरा रखा जाता है। देश में चुनाव की हवा बहने लगती है। अली अहमद दुल्लोपुर में एक छोटीसी दुकान चलाता है। उन दिनों देश में अकाल पडता है। " इलाके में जबर्दस्त अकाल पड गया। खेतों में बुआई नहीं हुई। जिन्होंने बोया वे अंकुर देखने के लिए तरस गए। न घर में दाना, न जेब में धेला। लोग काम की तलाश में गाँव छोडकर इधर - उधर जाने लगे। " [7] उदरपूर्ति के लिए काम की तलाश में गाँव के लोगों का गाँव छोडकर शहरों की ओर बढना इस पर भी लेखक ने यहाँ संकेत किया है।

अली अहमद की दुकान टूट गई थी इलाके के लोग काम - धंदे के लिए नौरोजाबाद जा रहे थे। अली अहमद भी जलील के साथ कोयले के खदानों में काम करने के लिए नौरोजाबाद चला गया। नौरोजाबाद से लौटने के बाद अली खलील

का ब्याह नुरू की बेटी से तय करता है। उस समय जबलपुर में हिंदू और मुसलमान के बीच दंगा - फसाद होता है। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी उस झगडे - लडाई को मिटाते है। इसी बीच खलील राबिया को लेकर भाग जाता है, इधर बलापुर में अली की भाभी चल बसती है। इन प्रसंगों से निराश होकर अली अहमद फिर बलापुर के बारे में सोचता है। इस अवस्था के संबंध में हजारी - प्रसाद द्विवेदी का कथन है - " बाण इस नगर से उस नगर में इस जनपद से उस जनपद में बरसों मारा - मारा फ़िरता रह। इस भटकन में ..... कौनसा कर्म नहीं किया।" [8] ठीक इसी प्रकार अली की स्थिति हो जाती है। वह रोजी रोटी की तलाश में बलापुर से इलाहाबाद, इलाहाबाद से शहपुरा, शहपुरा से दुल्लोपुर और फिर वापस बलापुर लौटता है।

बलापुर लौटने पर अली अहमद रामवृक्ष पाण्डे की मृत्यु की खबर सुनकर निराश होता है। वह उनके परिवारवालों को मिलने की बात करता है तो रनिया चौंक जाती है इस पर अली अहमद कहता है " अरे बुध्दू की अम्माँ, जो हुआ सो हुआ, जिसने हमारी बेइज्जत की वह तो अब रहा नहीं। और जो रहा नहीं, उससे क्या दुस्मनी ? " [9] पाण्डेजी के बेटे दयाशंकर पाण्डे अली अहमद से अच्छी तरह से पेश आते है। रनिया फिर से चूड़ी पहनाने का काम शुरू करती है। बलापुर में यह खबर फैल गई थी कि पं. सृष्टिनारायण पाण्डे ने मुन्ना को रखैल बना लिया है। बुध्दू बलापुर के स्कूल में जाता था, लेकिन एक दिन अशोककुमार पाण्डे तथा अन्य छात्रोंने उसकी बेइज्जती की बुध्दू कहता है " हमारे स्कूल में न, शाम को 'शाखा' लगती है, मुझे उसमें जाने नहीं देते। कहते हैं, तुम मियाँ हो शाखा में तुम्हारा क्या काम ? और अब सारे लडके हमें मियाँ - मियाँ, मुसल्ला, कटुवा कहके चिढ़ातें हैं। " [10] इस तरह बुध्दू की पढाई छूट गई। बुध्दू अब चूडी पहनाने का काम करने लगा। उसी समय पंडित नेहरूजी की मृत्यु की खबर बलापुर में पहूँच गयी। अब देश के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री थे। हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान को परास्त कर दिया। इस खुशी में रनिया कहती है - " अपना देस तो जीत गया जंग में। अउर कुछ जानते हो तुम ? ई खुसी में हमारे राजासाहब गए रहे दिल्ली। समझ गए न ? हमारे राजा माँड़ा। हुवाँ अपनी अँगुरी चीरके खून से तिलक लगाया सास्त्रीजी को .....। " [11]

स्वातंत्र्योत्तर भारत में चुनाव गाँव - गाँव तक पहुँचे। बलापुर भी इसके लिए अपवाद नहीं रहा। बलापुर में ग्रामीण चुनाव की गहमागहमी शुरू हो गई थी। लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के पाश्चात देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी बनी ग्रामों तक विकास पहुँचाने का प्रयत्न शुरू हुआ बलापुर में बिजली आ गई, पोस्टआफ़िस खुल गया। एक दिन अचानक बुध्दू और भूरी घर और गाँव छोडकर भाग गये। जिसके परिणाम स्वरूप सृष्टिनारायण पाण्डे के कहने से गाँव के सभी लोगों ने इकठ्ठे होकर अली अहमद को खुब पिटा जिसका वर्णन लेखक इस प्रकार करता है - " बस ! फिर तो लाठियाँ थीं और अल्ली चुड़िहार का जिस्म। वे लोग तब तक उसे मारते रहे जब तक कि वह धराशायी नहीं हो गया। " [12] उस रात अली अहमद को दुल्लोपुर के खलील की याद आती है, जो राबिया को लेकर भाग गया था। गाँव जीवन की अनीति पर इससे प्रकाश पडता है।

किसी भी देश में जंग छिड़ जाने पर वहाँ की जनता पनाह पाने के लिए सुरक्षित देश में पहुँचती है। उसी तथ्य के अनुसार पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान में जंग छिड़ जाने के कारण लडाई से त्रस्त लोग भागकर भारत में पनाह पाने आये। बलापुर में भी शरणार्थियों का कैंप बन गया। रनिया ने और एक लडकी को जन्म दिया, कुछ दिन बीतने के बाद बुध्दू - भूरी अपनी छोटी बेटी को लेकर वापस बलापुर आ गया। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे और मुन्ना नचनिया के संबंध बिगड गये थे। जब्बार मौलबी साहब गुजर गए थे ऐसे में एक दिन खबर पहुँची कि '' आजाद बांग्लादेश का आंदोलन समाप्त हो गया था। दूर - दूर के देशों से पूर्वी पाकिस्तान कहे जानेवाले देश को 'बांग्लादेश' नामक एक स्वतंत्र देश की मान्यता मिलने लगी थी। '' [13] यहाँ बांग्लादेश निर्मिति का तत्कालिन इतिहास साकार हुआ है। लेखक ने तत्कालीन युगबोध को स्पष्ट करके आधुनिक युगबोध को वाणी दी है।

अली अहमद बवाली की सहायता से डाक्टर बन गया है। पं. दयाशंकर पाण्डे के बेटे अशोककुमार पाण्डे अली अहमद की बेटी ताहिरा से प्रेम करने लगता है। सत्तार पोस्टमास्टर पर पोस्ट आफिस में जमा बावन हजार रूपयों के गबन करने का आरोप लगाया है, जो अपनी माँ को छोडकर बीबी बच्चों के साथ इलाहाबाद चला गया है। पं. रामवृक्ष पाण्डेजी की बेटी लता अध्यापिका बनकर बलापुर आ गई है। बिशुन भाट ने चिट्ठीरसा की नौकरी से मुक्त होकर बलापुर में 'बलापुर योगिनी ज्योतिष केंद्र' खोला है। पं. अशोककुमार पाण्डे ने ताहिरा को पाने का हरकोशिश प्रयास किया है लेकिन उसमें वह असफल रह गया है एक दिन उसकी शादी तय हो जाती है। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे पोते की शादी में फिल्मी गाने सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहते है - '' क्या जमाना आ गया ? ..... फिल्मी गाने सुने जा रहे है, स्टोरियाँ सुनी जा रही है वास्तविक ज्ञान की वार्ताओं में किसी को रूचि ही नहीं है। '' [14] सृष्टिनारायण पाण्डे की दृष्टि सिर्फ हिंदू समाज तक सीमित है लेकिन लेखक पूरे भारतवर्ष में होनेवाले संस्कृति के नैतिक पतन की ओर संकेत करते है और संस्कृति के नैतिक पतन के लिए फिल्मी दुनिया को जिम्मेदार समझते हैं। गाँव में फिल्मी गाने के रूप में आनेवाली हवा से परंपरागत भारतीय संस्कृति में अनेकसी बिगडावजन्य स्थितियाँ पैदा हो चुकी है यह यहाँ स्पष्ट होता है।

लेखक ने बलापुर के त्योहारों का चित्र भी उपन्यास में प्रस्तुत किया है। दिवाली दशहरा आदि त्योहारों को हिंदू - मुसलमान मिलकर बडे धुमधाम से मनाते हैं। इन त्योहारों, मेले, कला, रूढ़ियों के माध्यम से लोग अपने कर्मशील जीवन में भी आनंदोल्लास का अनुभव करते हैं। बलापुर के सभी हिंदू - मुसलमान त्योहारों का आनंद प्राप्त करके दुखों को भुलने का प्रयास करते हैं। आज त्योंहारों के माध्यम से गाँव जीवन में पैदा होनेवाली एकात्मता पर लेखक ने यहाँ चिंतन किया है।

अशोककुमार पाण्डे की बारात के लौटते ही खबर आयी की बिशुन पंडित संसार छोडकर चले गए हैं लल्लू अकेला रह गया है।

पुरवा में प्रतिवर्ष उर्स का मेला लगता है। बवाली, डॉ. रफी अहमद उर्फ बुध्दू साईकिल से मेले के लिए जाते हैं। मेला खत्म होते ही लोग कुल्लामुखारी करने के लिए कुएँ पर जाते हैं। कुएँ में उन्हें पं. सृष्टिनारायण की लाश दिखाई

देती है इससे पूरे बलापुर में कोहराम मच जाता है। अशोककुमारद्वारा थाने में रिपोर्ट दर्ज की जाती है। पुलिस आकर रामदेव चमार, तोतेपासी और डॉ. रफी अहमद उर्फ बुद्धू को गिरफ्तार करती है। गरीबों के होनेवाले शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हुए बवाली कहता है - '' आज गाँव के तीन निरदोस लोग फँसे हैं, कल तीस लोग फँसेंगे। परसो क्या होगा पता नहीं ? ई जुलम, ई सोसण, का सब लोग बरदास करेंगे ? '' [15] सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या मुन्ना नचनिया करता है क्योंकि पाण्डेजी उसके ऊपर भी आजीवन अत्याचार करते आये थे लेकिन इन बेगुनाहों को बिना अपराध किए गिरफ्तार किया जाता है। निरापराधियों को अपराधी ठहराने की नीति का लेखक ने पर्दाफाश किया है।

अली चुड़िहार की तबीयत अचानक बिगड जाने से रात में उसका निधन हो जाता है। इसी कारण बुदधू उर्फ डॉ. रफी अहमद शहर छोडकर बलापुर रहने आता है। लता का बलापुर से ट्रांसफर हो जाता है। अशोककुमार पाण्डे सृष्टिनारायण पाण्डे कि हत्या के केस में तीन बेगुनाहों को फसाने की कोशिश करता है। अजय गाँव में 'बलापुर ग्रामीण पुस्तकालय' खोलने की कोशीश करता है। उसके अनुसार पुस्तकों से लोगों के सोचने समझने के स्तर का उनकी चेतना का विकास हो जाता है लेकिन उसकी इस योजना को बीना सोचे - समझे ही पं. अशोककुमार पाण्डे अजय के रास्तों में संकट खडे करने का निश्चय करते है। अशोककुमार पाण्डे भी अपने दादा की शोषणरूपी मशाल को अंत तक जलाते हैं और गरीबों का शोषण करते है।

बलापुर में पं. अशोककुमार पाण्डे 'सरस्वती सिसु मंदिर' खोलते है और बच्चों को इसी स्कूल में भेजने का एलान करते हैं। यह देखकर लल्लू को गुस्सा आता है और चिखते हुए कहता है- '' डैम, फुल। ब्लडी हूस। बास्टर्ड। '' [16] उसी दिन दोपहर लल्लु की हत्या हो जाती है। उस समय गाँव के सभी लोग वहाँ आते है किसी के मुँह से कोइ शब्द नहीं निकलता। सत्तार की अम्माँ आकर लाश पर गिरकर रो पडती है। वहाँ पर उपस्थित लोगों से घुरपुर जाके रिपोट लिखने का आवाहन करती है, लेकिन कोई भी आगे नहीं आता तो वह खुद भीड को गालियाँ देती हूई घूरपुर जाने के लिए गली में अकेली खडी होती है। उनके हाथ - पाँव काँप रहे है। इतना कहकर सत्तार की अम्माँ लाठी टेकती हुई आगे बढती है। भीड जैसे के वैसे खडी रहती है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य कथा में आजादी के बाद मुखड़ा बदलने वाले गाँव का, वहाँ के लोगों में बदलाव के नाम पर होनेवाली कठोरता का, गाँव में फैली अनीति का, जंग के नाम पर होनेवाले विस्थापन का, ग्रामीण आँचल की अर्थाभाव की स्थिति का, जमींदार - श्रमिकों के बीच के संघर्ष का, सबलों द्वारा दुर्बलों की पीटाई का, तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्यों की तलाश का, दुर्बलों का धर्मपरिवर्तन के लिए दिया जानेवाले नकार का, युवा लडकियों को भगाकर उनसे विवाह करने का आदि के रूप में अनेक संदर्भ आये हैं जो बदलते हुए गाँव की निशानी लगते हैं। ये सारे संदर्भ मुख्य कथा में आये हैं।

1.2 गौण कथाएँ

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में मुख्य कथा के साथ - साथ अनेक छोटी - छोटी गौण कथाओं का विवेचन किया है। गौण कथाएँ मुख्य कथा के विकसन और सौंदर्यवर्धन में सहायक होती है।

आलोच्य उपन्यास की गौण कथाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार है -

अली अहमद बलापुर छोडकर शहपुरा पहुँच जाता है। शहपुरा में नुरू नाम का मुसलमान अली अहमद की सहायता करता है। नुरू भी काम - धंदे की तलाश में दो बरस पहले शहपुरा आया है वह मुडकी का रहनेवाला है। उसके पिछे उसकी बीवी और एक लडकी है। नुरू अल्ली को दलाल चच्चा से भेंट कराने का वादा करता है लेकिन दुल्लोपुर में पतरस भाई से खबर मिलती है कि दलाल चच्चा इस दुनिया में नहीं रहे है, इसे सुनकर अली अहमद निराश हो जाता है उस वक्त नुरू अपनी जान - पहचान से तथा पतरमभाई की सहायता से अल्ली को काम - धंदे से जोडता है। कुछ दिनों के बाद अली अहमद इस इलाके के एक नेक मुसलमान के रूप में प्रसिद्ध होता है। बिट्टन खाला राबिया की शादी खलील से करने से इन्कार करती है, तो उस समय अल्ली चुड़िहार का प्रण पुरा करने के लिए नुरू ही उसकी सहायता करता है। अली अहमद खलील का ब्याह नुरू की बेटी के साथ तय करते हुए कहता है - " मुन्नी तो तुम्हारी ही बेटी है, इलाहाबादी भाई, जिसे चाहो सौंप दो। " [17] अली अहमद दुल्लोपुर छोडकर बलापुर वापस जा रहा था तब नुरू अपने लडकी की शादी टूटने के दुःख को भूलकर अल्ली से मिलने आता है। नुरू ने अली अहमद की बडी सहायता की है फिर भी वह अली को कहता है " मैं जानता हूँ इलाहाबादी भाई, कि तुम्हें यहाँ कोई आराम नहीं मिला। मैं भी तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सका। " [18] रनिया को भी नुरू की लडकी की शादी न होने से दुःख होता है और वह नुरू तथा उसकी बीवी से माँफी माँगती है। नुरू की बीवी रनिया को उसकी कानों की बालियाँ वापस करती है, तब रनिया बालियाँ फिर नुरू की बीवी के आँचल में बाँध देती है और कहती है - " नहीं आपा, ये तो मुन्नी की ही हैं। अभी न सही, जब उसका ब्याह हो तो इन्हें उसके कानों में पहना देना। मेरी तरफ से। " [19]

दुल्लोपुर गाँव में एक मुसलमान परिवार के आने की दूसरी गौण कथा यहाँ हैं। अली अहमद की जान - पहचान के बाद उस मुस्लिम परिवार के दो भाईयों से अली के सम्बन्ध दृढ होते है। अली पतरसभाई का मकान छोडकर उन खलील और जलील नाम के भाईयों के निकट रहने को जाता है। वहाँ पर अली अहमद खेत बनाने के लिए जमीन तैयार करता है।

अली अहमदद्वारा जलील को उसके छोटे भाई खलील के लिए कोई काम - धंदा ढूँढने की सलाह देना, डिंडौरी में शराब बनाने की फॅक्ट्री खुलना, खलील का लकडी बेचने का काम करना तथा डिंडौरी के बाजार में राबिया से मिलने जाना, और वहाँ राबिया से ब्याह के बारे में पूछना, राबियाद्वारा अम्माँ से मिलने की सलाह देना आदि अनेक घटनाएँ वहाँ के परिवेश की स्थिति पर प्रकाश डालती है।

जलील अपने भाई के शादी की बात करने के लिए अली अहमद के परिवार को लेकर मुडकी पहुँचने पर वहाँ बिट्टन खाला और दुल्लोपुर से आये हुए लोगो में

झगडा हो जाता है। झगडे में बिट्टन खाला अली अहमद को " तुम क्या सुनाओगे आँ ? तुम तो खुद उठल्लू का चुल्हा हो। ऐसे ही इज्जतदार होते तो अपने गाँव - देस में न होते यहाँ क्यों दर - दर भटकते ? " [20] कहकर टोकती है। जिससे अली अहमद निराश होता है और आज ही के दिन खलील का ब्याह तय करके लौटने का प्रण करता है। अली अहमद खलील के लिए नुरू की बेटी का हात माँगता है, और खलील के साथ नुरू की बेटी का ब्याह तय होता है। रनिया अपने कानों से चाँदी की बालियाँ उतरकर नुरू की बेटी मुन्नी के कानों में पहनती है। इस प्रसंग से " जलील और उसकी बीवी की आँखें डबडबा आई। " [21] यहाँ रिश्ते के जुडाव की संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं।

डिंडौरी से लौटने के बाद अली अहमद को यह खबर मिली कि खलील बिट्टन खाला की लडकी को लेकर भाग गया, जिससे अली अहमद को गहरा दुःख पहुँचता हैं और अली अपनी बीवी रनिया से कहता है " हाँ, बुध्दू की अम्माँ सच। हमारी जबान खाली गई। हमारी नाक नीची हो गई।" [22] और अंत में यह निश्चय करके सो गये कि अब यहाँ नहीं रहना है। जुबान पर तय होनेवाले रिश्तों के टूटन के बाद गहरा सदमा पहुँचने की स्थिति का चित्रण यहाँ मिलता है।

प्रस्तुत उपन्यास में पं. सृष्टिनारायण और मुन्ना नचनिया की कथा गौण कथा के रूप में आयी है। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे ने करमा की एक नौटंकी में मुन्ना का नाच देखा था। मुन्ना इलाके का माना हुआ नचनिया था। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे मन बहलाने के लिए खेत के कमरे पर मुन्ना को बुलाते थे। पूरे गाँव जवार में यह मशहूर हो गया कि पं. सृष्टिनारायण पाण्डे ने मुन्ना को रखैल बना लिया है। पंडितजी उसके नाच - नौटंकी का सट्टा भी लगाते थे।

गाँव में रामलीला आयोजन के अवसर पर सृष्टिनारायण पाण्डे मुन्ना की तरफ ध्यान नहीं देते, क्योंकि मुन्ना अब बडा हो गया था और उसका बदन पहले जैसा कोमल नहीं रहा था, इससे मुन्ना नाराज होकर बीच में ही रामलीला छोडकर भाग जाता है। पंडितजी मुन्ना से लगभग एक बरस से खींचे - खींचे रहते हैं पहले अक्सर हालचाल पूछकर अनाज और पैसों की मदद करते थे लेकिन अब यह परिस्थिति नहीं रही पंडितजी रामलीला कमेटी के अध्यक्ष है, और मुन्ना के भागने से अध्यक्ष की नाक कट जाने के भय से पंडितजी उसे ढूँढ निकालते है, इस पर पुछने पर मुन्ना का उत्तर था " हम का बतावैं महाराज मुन्ना ने स्त्रीसुलभ स्वर में कहना शुरू किया, 'आप बताइए कि हममें दोख का है ? हम त आपन बाप - मतारी, आपन पेट, आपन इज्जत, सबकुछ आपके चरणों में अरपित कर दिए हैं, मुलाँ आप ..... ? " [23] इस पर पाण्डेजी मुन्ना को मारपीट करते है और इस गाँव से निकालते हैं।

बिशुन पंडित की मृत्यु के समय मुन्ना उनसे योगिनी विद्या की शिक्षा और किताब लेता है। लगभग कई वर्षों के बाद बलापुर में साधू - महात्मा अपने चेले के साथ पधारने की खबर मिली, जिनका नाम सच्चिदानंद महाराज और चेले का भानुप्रताप हैं।

एक दिन कुटिया में अजय नाम का बलापुर का एक युवक महात्माजी से पाण्डेजी की हत्या के बारे में पूछता है तो महाराज उसे मुन्ना का नाम बताते हैं। मुन्ना ने पाण्डेजी हत्या की उस हत्या की तहकीकात सुनकर अजय सुन्न रह जाता

है और निकल जाता है। रात के समय महाराज और उनका चेला कुटिया छोडकर निकलते हैं, तब चेला भानुप्रताप महात्माजी से मुन्ना के बारे में पूछता है तो महाराज जवाब देते है " वह एक नचनिया था। मुन्ना चमार।" [24] भानुप्रताप का इस उत्तर से समाधान नहीं होता वह और एक सवाल पूछता है "ऊ मुन्ना का फिर क्या हुआ ? क्या ऊ जीवित है महराज ? "इस पर सच्चिदानंद महाराज का जवाब था - "हाँ। हाँ, वह जीवित है और तुम्हारे निकट है। तुम उसे देख रहे हो। " [25]

अली अहमद और नुरू की कथा भी गौण कथा के रूप में मुख्य कथा को आगे बढाती है। अली अहमद दुल्लोपुर आने के बाद 'इलाहाबादी भाई' के उपनाम से जाना पहचाना जाता था। एक दिन नुरू दो स्त्रियों को लेकर दुल्लोपुर अली अहमद के घर पहुँच जाता है। नुरू अली को बताता है कि " मुडकी में इन्हें सब बिट्टन कहते हैं। शौहर इनके कजा कर गए हैं। बस यही एक बेटी राबिया। इधर कुछ दिनों से इसकी तबीयत अनमन रहा करती है। अब बेचारी औरत जात कहाँ लेकर जायँ ? मैंने कहा चलो दुल्लोपुर के अस्पताल में दिखा देता हूँ।" [26] इन गरीब स्त्रीयों की अली अहमद और नुरू सहायता करते हैं। इसी दौरान जलील का छोटा भाई खलील राबिया को पसन्द करने लगता है और उससे शादी करने के ख्वाब देखता रहता है।

दुल्लोपुर में आए अली अहमद और जलील का परिवार मुडकी में बिट्टन खाला के घर एक दिन उसका इंतजार करते बैठे हुए हैं, बिट्टन खाला बाजार गई हुई है।

बिट्टन खाला को गाँव में प्रवेश करते ही मालूम हो जाता है कि उनके यहाँ कुछ बिन - बुलाए मेहमान आए हुए हैं। लेकिन यह बात उसको पसन्द नहीं थी वह सोचती है कि यह सब लोग राबिया का हात माँगने के लिए ही यहाँ आए है। बिट्टन आते ही आए हुए मेहमानों को सुनाती है कि - " मुझे नहीं करना है अपनी बेटी का ब्याह - व्याह अभी। जब करना होगा तब देखा जाएगा। अरे एकठे तो बेटी है मेरी। कहीं अच्छा घर - बार देखके करूँगी, कि ऐसे ही ऐरू - गैरू के गले बाँध दूँगी। क्या मैं जानती नहीं खलील को ? क्या करता है वो ? दिन - दिन भर जुल्फी में तेल लगाके घुमता ही तो रहता है। मुझे नहीं देनी है अपनी लडकी ऐसे घर में .....।" [27] दुल्लोपुरवालो ने उसे समझाने की कोशिश की लेकिन वह एक न मानी और उसने उन लोगों पर गालियों की बौछार कर दी तथा सबको घर से बाहर निकाल दिया। बिट्टन खाला भुल जाती है कि इन्ही दुल्लोपुरवालो ने एक दिन उसकी मदद की थी। लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने बिट्टन खाला के चित्रण से एहसान फरामोश लोगों की प्रवृत्ति को दृष्टिगोचर किया है। यह मुडकीवाला प्रसंग अली अहमद के दिमाग में हमेशा के लिए तरोताजा रह जाता है और जीवन में उसकी हमेशा याद आती रहती है।

प्रस्तुत उपन्यास में गौण कथा के रूप में अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने ईसाई लोगों के चित्रण में पतरसभाई की कहानी भी व्यक्त की है।

दुल्लोपुर पहुँचने पर इंडियन फादर असोक फ्रांसिस को देखकर अली हैराण रह जाता है वह सोचता था स्वाधिनता के पश्चात सभी अँग्रेज भारत छोडकर चले गए होंगे इस जंगल में रह गए अँग्रेज भी जा रहे हैं परंतु आजादी के बाद भी हिन्दुस्तान में अँग्रेज रह रहे थे यह देखकर उसे आश्चर्य होता है।

पतरसभाई जो असल में रूपसिंह गोंड है, जिन्होनें ईसाई धर्म स्विकार कर लिया हैं, जो अली अहमद की मदद कर उसे दुकान खोल देते है। पतरस को एक लडका और एक लडकी है। पतरस लडकी के विवाह से चिंतित है क्योंकि इस इलाके में दुधनिया नाम के गाँव में ही ईसाई परिवार रहता है इसके अलावा कहीं नहीं। पतरसभाई अली अहमद को ईसाई धर्म स्विकार करने के लिए कहता है, जिससे जिंदगी सँवर सकती है। वह कहता है " अगर तुम ईसाई होते तो यहाँ अस्पताल में या स्कूल में कहीं तुम्हें नौकरी मिल सकती थी। बंधी - बंधाई तनखाह मिलती और जिंदगी आराम से कट जाती। न कोई हय - हय न खट - खट। " [28] पतरस अली को उसके बेटे को विलायत भेजने की बात करता है मगर रनिया और अली अहमद धर्मपरिवर्तन का विरोध करते है।

एक दिन पतरस और उसकी बीवी के बीच झगडा शुरू होता है। पतरस की बीवी का कहना है कि अपनी बेटी के लिए जो लडका ठीक करके आए हैं वह भुलवा कोल था और पतरसभाई असल में गोंड हैं, तो गोंड और कोल में सम्बध नहीं जूड सकते। इस पर पतरस कहता है उसने ईसाई धर्म स्विकार किया है अब वह अँतोनी बन गया है लेकिन उसकी बीवी नहीं मानती और कहती है " हमने धरम बदला है, जात नहीं।" [29] इस अवस्था में वह अली अहमद को न्याय के लिए बुलाती है। अली अहमद पतरसभाई को समझाते हुए कहता है- " देखो पतरस भाई, मरियम की माँ ठीक कह रही हैं। अपना धरम बदलकर एक गलती तो तुमने पहले ही की है, अब अपनी जात भरस्ट करके दूसरी गलती मत करो आदमी को अपनी कोई - न - कोई चीज तो बचाकर रखनी ही चाहिए।" [30] इस कथन से उपन्यासकार यहाँ पर धर्म - परिवर्तन की बात को भी उजागर करता है। अली अहमद अपने ऊपर आए धर्म परिवर्तन के संकट को भी टाल देता है। इस गौण कथा में धर्मपरिवर्तन की कारण मीमांसा को लेखक ने स्पष्ट करते हुए यह बताया है कि कई लोगों को धर्म प्राण से भी प्यारा होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के जंग की तथा लडाई की एक कथा गौण कथा के रूप में आयी हैं।

पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान में जंग छिड गई है, पूर्वी पाकिस्तान के नेता शेख मुजीबुर्रहमान गिरफ्तार कर लिए गए है। वे अपने इलाके को पश्चिमी पाकिस्तान से आजाद करना चाहते हैं और बांग्लादेश नाम का अलग देश बनाना चाहते हैं, भारत सरकार उनकी मदद कर रही है, जंग से हैराण लोग भागकर भारत के गाँवों, कस्बों, और शहरों में पनाह ले रहे है। भारत सरकार की ओर से उन्हें राशन - पानी उपलब्ध कराया गया है।

इस युद्ध का कारण लेखक सत्तार द्वारा स्पष्ट करते है की पूर्वी पाकिस्तान को चावल की जरूरत होती है तो पश्चिमीवाले इसका दाम तिगुना करते हैं। और बंगाली लोग खासकर चावल ही खाते हैं। इस अन्याय अत्याचार से त्रस्त होकर उन्होंने आंदोलन छेड दिया है।

एक रोज शाम एक बंगाली बाबू रनिया की चुडियों से भरी टोकरी देखकर ठिठक जाता है और वह अली से अपने पत्नी के लिए चुडिया पहनाने की इच्छा प्रकट करते हुए बोलता है - " तुम हमारा स्त्री को भी पैनाएगा ? " [31] अगले दिन ही रनिया शरणार्थी कैंप पहुँचती है, तो ड्युटी पर तैनात सिपाही उसे अंदर नहीं जाने देता और अंदरवालों को भी बाहर आने की अनुमती नहीं देता। काँटेदार तारों

के एक तरफ रनिया तो दूसरी तरफ बंगाली बाबू की स्त्री हैं। इसका वर्णन लेखक करता है - '' एक औरत बाड़ के भीतर, बंदिनी। दूसरी औरत बाड़ के बाहर, भारत देश का मूल नागरिक, स्वतंत्र। '' [32] चूडी पहनने के बाद बंगाली बाबू की स्त्री थोडासा चावल रनिया के सामने रखकर कहती है - '' पैसे तो हमारे पास है नहीं तुम थोडा चावल ले लो आज हम भात नहीं खायेंगे'' इस प्रसंग को लेखक ने बडे ही दिलचस्प रूप से खींचा है और जंग के दौरान हुए वहाँ के जनजीवन की त्रासदी को संवेदना के साथ चित्रित किया है।

बांग्लादेश आजाद होने के बाद भी बंगाली बाबू अपने देश नहीं लौट जाता वह कहता है - '' कैंप के सारे लोग चले गए किंतु हम इधर भाग आए हैं, तुम लोगों से जो प्रेम मिला उसे हम कभी भी भूल नहीं सकते हम इधर ही रहनेवाले हैं '' लेकिन इससे सभी लोगों को आश्चर्य होता है और इसका कारण पूछने पर वह जवाब देता है - '' अमारा जवान बेटा मार दिया गया। अमारा घर लूट गया। अब अम क्या करेगा जाके। हमें जीवनदान दिया इंडिया ने, तुमारे गाँव ने। अम अब इसी जगे रहेंगा।'' [33] इस कथन से लेखक अन्य धर्मियों के प्रति भारतीय लोगों की मानवतावादी दृष्टि को उजागर करते है। अन्य देशवासियों के प्रति भारतवासियों में प्रेमभावना तथा मानवतावादी दृष्टिकोण का चित्रण इस गौण कथा के रूप में उपन्यास में पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

संक्षिप्त में विविध प्रकार की गौण कथाएँ उपन्यास के मूल कथ्य को आगे बढाती हैं। उपकथाओं में आनेवाले पात्र भी मुख्य पात्र की विविधांगी मदद करके उसे अपने गंतव्य तक पहुँचाते हैं।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में विविध घटनाओं और प्रसंगों के साथ तथा पात्रों के साथ अलग - अलग कथाएँ जुड जाती है। इन उपकथानकों की भीड में मुख्य कथा की तलाश करके उसका संबंध गौण कथाओं से जोडने का काम करना पडता है।

1.3 कथागत बिखराव

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासो में कथागत बिखराव अधिक मात्रा में दिखाई देता है। इस तथ्य पर 'मुखड़ा क्या देखे' अपवाद नहीं है। अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में कथागत बिखराव अधिक रूप में दिखाई देता है। इस उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण घटना तथा प्रसंगों की संख्या भी बडी मात्रा में प्रस्तुत हो गई हैं। कथागत बिखराव के संबंध में डॉ. क्षितिज धुमाळ का कथन हैं '' यथार्थ स्थितियों का विविध आयामी चित्रण करनेवाले आज के उपन्यासों ने कथा के सौष्ठव, गठन और अनुबन्धित रूपायन को तार - तार कर दिया है, जिससे कथागत बिखराव और भी उभर रहा है।'' [34]

'मुखड़ा क्या देखे' कथात्मक उपन्यास है। एक मुख्य कथा के साथ अनेक उपकथाएँ उपन्यास को सर्वश्रेष्ठ बनाने में सहायक सिध्द हुई है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का प्रमुख पात्र अली अहमद चुडिहार और उसके परिवार के शोषण की मुख्य कथा हैं। बलापुर में रहनेवाला अली अहमद पाण्डे बाबा के अत्याचार की शिकायत करने देश के प्रधानमंत्री नेहरूजी के पास इलाहाबाद चला जाता है। उपन्यास के पहले चरण में इस घटना से लेकर अली अहमद का बलापुर छोडने की घटना तथा शहपुरा, दुल्लोपुर जाकर बसने की घटनाओं ने उपन्यास में अनेक कथा - उपकथाओं का ताना - बाना बुना गया है। बलापुर में रहनेवाले चमार, पासी, काछी मुसलमान, मुसहर, कोहार, लोहार, अहीर बनिया, हलवाई, सभी जाती - धर्मों के लोगों के साथ जुडी छोटी - बडी घटनाएँ कथा में बिखराव निर्माण करती है। दुल्लोपुर और शहापुरा में अली अहमद जिस प्रकार दिन गुजारता है और अपनी घर - गृहस्थी जमाता है वहाँ के लोगों के स्वरूप एवं चित्रण से कथा का विस्तार हो चुका है। फुल्ली दाई की नातिन रामकली की इज्जत लुटने की घटना समाज में हो रहे अन्याय अत्याचार को स्पष्ट करती है। जबलपुर में हुए हिंदू - मुसलमान दंगों का वर्णन करके लेखक ने उपन्यास में सांप्रदायिक भेदभाव को उजागर करने का प्रयास किया हैं।

दुल्लोपुर में ईसाई लोगों के धर्मप्रसार की नीति का लेखक ने चित्रण खींचा हैं जिससे कथा में नया मोड आ जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अकाल और उससे पीडितों की विभिन्न समस्याएँ, घटनाएँ तथा सरकारद्वारा भेजी गई राहत सामग्री, भूखे पेटवासियों के अलावा जमिंदारों को मिलती है इसे दिखाकर लेखक ने यहाँ अधिकारी वर्ग की भ्रष्टनीति का पर्दाफाश किया है। इन घटनाओं ने कथा में बिखरापन आ गया हैं।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास भारत के ग्रामांचल से निकटता रखता हैं इन छोटे - बडे देहातों, कस्बों, गाँवों में घटित होनेवाली विविध घटनाएँ अनन्य जगह में रहनेवाले लोगों को भी प्रभावित करती हैं, जिससे कथानक में नयापन आ जाता हैं। लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण खिंचते हुऐ अली अहमद का परिवार केंद्र में रखा हैं, और इससे संबंधित सांप्रदायिक घटना, धार्मिक भेदाभेद, जमींदारी प्रथा, हड़पनीति, अंधविश्वासों की परंपराएँ, चुनावी राजनीति की घटनाएँ उपन्यास की मूल कथा को बल देती हैं, मगर उसमें घटनाओं की श्रृंखला दिखाई देती और बिखरावजन्य स्थिति उत्पन्न होती हैं।

उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने मुख्य कथा के साथ उपन्यास में नेहरूजी का शासनकाल, चीन का आक्रमण, शास्त्रीजी के शासन - काल में हिन्दुस्तान - पाकिस्तान युध्द, इंदिराजी के समय में काँग्रेस विभाजन, नेहरूजी, शास्त्रीजी की मृत्यु, बांग्लादेश का उदय, आपातकाल, नक्सलवाद आदि राष्ट्रीय, अंर्तराष्ट्रीय घटनाओं को कथा में इस तरह पिरोया है कि यह उपन्यास किसी एक जाति विशेष की कथा न रहकर संपूर्ण भारतीय जनमानस की कथा बन जाता है। इतनी सारी घटनाओं से उपन्यास की कहीं - कहीं पर मूल कथा रूक जाती हैं और नये - नये प्रसंगों, सवालों एवं घटनाओं को निर्माण करती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय संस्कृति का यथार्थ चित्रण और उसमें स्थापित विभिन्नता स्पष्ट दिखाई देती हैं। भारतीय त्योहार, उत्सव, पर्व, मेले, उससे जुडे पात्र और उनके प्रसंग उपन्यास के घटनाओं की संख्या में वृध्दी करते हैं इसी कारण उपन्यास में कथागत बिखराव दृष्टिगोचर होता हैं।

उपन्यास के तीसरे चरण में सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या, लल्लू की हत्या, बवाली का क्रांतिकारी चेहरा, स्वाधीनता के बाद देश में हुए नए - नए बदलाव के वर्णन से प्रसंगों की अधिकता स्पष्ट दिखाई देती है जिससे कथा में बिखरापन आया है। इस कथागत बिखराव को स्पष्ट करते हुए डॉ. क्षितिज धुमाळजी कहते है - '' जीवन के जटिल रूप को समझने - समझाने, जीवन के संघर्ष में प्राप्त जीवन - सत्य को अभिव्यक्त करने, अपने ही जीवन अनुभव को अधिक स्पष्ट रूप में तलाशने, जीवन विषयक चेतना को अधिक सुक्ष्म, अधिक व्यापक एवं सर्व समावेशी बनाने का उद्‌देश्य जब साहित्य के सामने प्रस्तुत हुआ तब कथा - तत्त्व धीरे - धीरे लुप्त होने लगा और कथागत बिखराव की स्थितियों का निर्माण हुआ। '' [35]

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अनेक उपकथाओं के साथ कथा को एक श्रृंखला में पिरोने की कोशिश की है जिससे उपन्यास में स्पष्टतः कथागत बिखराव दृष्टिगोचर होता है।

1.4 अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाएँ

साहित्य के सभी विधाओं में 'उपन्यास' विधा सबसे लोकप्रिय है। आधुनिक उपन्यासों का बदलता स्वरूप इसका एक कारण है। आज उपन्यास में अनेक कथा - उपकथाओं का मिश्रण दृष्टिगोचर होता है, आज के आधुनिक युग की यह महत्त्वपूर्ण खोज मानी जानी चाहिए। एक मूल कथा अन्य सौ - सौ कथाओं को जन्म देती है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में इसकी प्रचुरता सर्वत्र है। 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भी रचनाकार ने एक मूल कथा के माध्यम से तथा सहयोग से अलग विषयों को तलाशन्वेाली कथाएँ उपन्यास में चित्रित की है। उपन्यास के इस नए रूप के विषय में डॉ. क्षितिज धुमाळजी का कथन है - '' एक कथा और एक विचार आज उपन्यास साहित्य से दूर हो रहा है। विविध पात्रों, उनकी विविध प्रवृत्तियों, उनके जीवन में घटनेवाली विभिन्न घटनाओं, उन पात्रों की विविध विचारधाराओं उनकी विविध प्रकार की जीवन शैलियों आदि से कथासूत्र का ताना - बाना बुनाया जा रहा है।'' [36]

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में चित्रित अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाओं पर हम यहाँ सोचेंगे -

एक रोज अली अहमद सिंधी की दुकान में बैठा था तब वह रेडियो पर खबर सुनता है कि जबलपुर में दंगा हो गया है इससे वह चिंतित हो जाता है। पाकिस्तान बनने के वक्त भी भयंकर मार - काट हुई थी, इतने दिनों बाद भी हिंदू - मुसलमान एक दूसरे का खून बह रहे हैं इससे अली को दुःख होता है। इसके बारे में वह पुछताछ करता है कि '' क्यों सिंधी भाई, क्यों लड़ रहे हैं ये लोग ? '' [37] इसके उत्तर में सिंधी एक भयानक सत्य का उद्‌घाटन करते हुए कहता है'' जबलपुर के एक सेठ का लडका है अनवर और दूसरे सेठ की लडकी उषा दोनों में प्यार मुहब्बत हो जाती है इस घटना से समाज के शत्रुओं को मौका मिल जाता है और लाखो बेगुनाहों का खुन बहता है।'' इस घटना से लेखक ने समाज की जीर्ण - शीर्ण रूढी पंरपराओं के कारण जो खूनखराबा होता है उसकी ओर ध्यान खींचा है। उसी तरह अली अहमद का बेटा बुदधू और तोते पासी की बेटी भूरी एक दुसरे से प्यार करते है लेकिन गाँववालों तथा समाज के डर से यह बात किसी को बताए बिना भाग जाना पसन्द करते हैं और शादी करते हैं। इन घटनाओं से लेखक स्पष्ट करना चाहता है कि स्वाधीनता के पश्चात भी हम पुराने विचारों में ही विश्वास कर रहे हैं। कहने के लिए ही सिर्फ मुँह पर बात है कि हिंदू - मुस्लिम भाई - भाई लेकिन वास्तव बहुत ही गिरा हुआ तथा भयानक हैं। इन प्रसंगों से लेखक की दृष्टि जातीय भेदभाव, ऊँच - नीच भेदाभेद, आंतर्जातीय विवाह का विरोध आदि से अलग - अलग कथाएँ सामने आती है और प्रेम से फसादों का निर्माण होता है, इस पर लेखक दृष्टिक्षेप करना चाहते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में अकाल की महाभयंकर स्थिति का वर्णन आया है गाँव के लोग काम ढूँढने के लिए इधर - उधर भटक रहे हैं। सरकारद्‌वारा राहत सामग्री भेजी जा रही हैं। लेकिन जो अधिकारी लोग सामग्री बाँटते हैं वह आम आदमी के साथ गुंडागर्दी करते हैं। इन घटनाओं से गाँवो के लोग निराश हो जाते है। जितनी सामग्री सरकार ने भेजी हैं उसे ठीक तरह से नहीं बाँटा जाता उसमें घुसखोरी तथा भ्रष्टाचार होता है इसकी प्रतिक्रिया के रूप में लोग कहते है ''

सामान तो खूब है, मगर साहब कंजूसी कर रहा है। यह भी कह रहा था कि अगली बार से पैसा लेकर आना। चवन्नी का पाउडर और अठन्नी का ये।'' [38] असल में इलाके में भयंकर अकाल पडने के कारण गरीब लोगों को खाने की चीजें सरकारद्वारा दी हैं लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए भी पैसे देने पडते हैं इन घटनाओं से लोग त्रस्त होते है। यहाँ सरकारी अधिकारियों की भ्रष्ट नीति के दर्शन होते हैं।

लेखक दूसरी एक घटना से उपन्यास की कथा में एक नया मोड लाता है सत्तार पोस्टमास्टर बलापुर पोस्ट आफिस में जमा बचनखातों में से बावन हजार रूपयों को हडप करता है। इस कारण उसे किसी भी वक्त गिरफ्तार किया जा सकता है। सत्तार को पोस्टमास्टर पद से हटाया जाता है। इस घटना से लेखक समाज के शिक्षित लोगों की गरीबों की खून - पसीने की कमाई को हडप करने की नीति का पर्दाफाश करते हैं। गरीबों की रोटी छिननेवाले अधिकारी तथा भ्रष्ट उच्चवर्ग की क्रुर नीति को स्पष्ट करते हुए इन लोगों के असली चेहरों को पहचानने की माँग करते हैं। इन छोटी कथाओं के माध्यमसे उपन्यासकार भ्रष्ट राजनिती, सुदखोरी, कपट, छल करके गरीब तथा असहाय लोगों का शोषण करनेवाले इस दृष्ट लोगों का नाश करने की जरूरत को उजागर करने का प्रयास करते है। इन लोगों के चित्रण तथा कार्यों से भी अलग विषय तथा कथाएँ उभरकर सामने आती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की एक अन्य कथा उपन्यास में एक नया विषय तलाश कर समाज का प्रबोधन करना चाहती है।

अली अहमद का बेटा बुध्दू स्कूल में पढ़ता है वह एक दिन रोते हुए घर आता है तो अली तथा रनिया उसका कारण पूछते है, लेकिन बुध्दू अब स्कूल न जाने की बात कहता है। इस कारण अली को गुस्सा आता है, लेकिन बुध्दू इसका स्पष्टीकरण देते हुए कहता है '' हमारे स्कूल में न, शाम को 'शाखा' लगती है, मुझे उसमें जाने नहीं देते। कहते हैं, तुम मियाँ हो, 'शाखा' में तुम्हारा क्या काम ? और अब सारे लडके हमें मियाँ - मियाँ मुसल्ला, कटुवा कहके चिढाते हैं। बहुत बुरी - बुरी गालियाँ बकते हैं मैं अब स्कूल नहीं जाऊँगा।'' [39] इस कथा के माध्यम से उपन्यासकार बताते है कि समाज में व्याप्त धार्मिकता तथा जातीयता ने हमारे देश के भविष्य को खतरे में डाला है। इससे मासुम तथा छोटे - छोटे बच्चों की जिंदगियाँ उजडती जा रही है। इससे गरीब तथा असहाय बच्चे ऐसी अवस्था में शिक्षा प्राप्ति नहीं कर सकते हैं, ये छोटे बच्चे शिक्षा तथा संस्कारों से दूर धकेले जाने पर गुनहगार बनने के लिए मजबुर होते हैं।

आज समाज में व्याप्त वर्गीय भेदाभेद से लाखो जिंदगियाँ खिलने से पहले उजड रही हैं, कम आयु में ही हम उन्हें ऊँच - नीच के भेदाभेद से परिचित करते हैं, उनके मन में एक दूसरे के विषय में जहर तथा द्वेष भरते हैं, तो उनसे अच्छे एवं सुसंस्कृत व्यवहार की कैसे अपेक्षा कर सकते है। इस दर्दनाक कहानी के चित्रण से उपन्यासकार ने हमारे सामने हजारों सवालों तथा सैकडों कहानियों को खडा करने का प्रयास किया हैं। यहाँ भेदाभेद के कारण नयी पीढी पर होनेवाले दृष्परिणामों को विशद किया हैं।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की और एक कथा में कई अलग विषयों का नेतृत्व किया है। बलापुर तथा इलाके के लोग मँहगाई से त्रस्त हैं इसके लिए

बवाली पूरी तरह पूंजीपती तथा जमींदार लोगों को जिम्मेदार ठहराता है। नए - नए नेता तथा धन्नासेठ पैदा होने के कारण जनता को यह सारा बोझ उठाना पडता हैं, इसके लिए सशस्त्र क्रांति की आवश्यकता पर वह बल देता है '' जिसे तुम खुन - खराबा कह रहे हो उसे हम क्रांति कहते हैं। क्रांति का होना बहुत जरूरी है।'' [40] बवाली यहाँ गांधी - नेहरू के तत्त्वों तथा विचारों की आलोचना करता है। सच्ची आजादी के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए बवाली कहता है - '' आजादी दिलाई है भगतसिंह, असफाकुल्ला खाँ अउर चंद्रशेखर आजाद की सहादत ने।'' [41] बवाली के विचार में समाज में व्याप्त अन्याय - अत्याचार को जड से मिठाने के लिए क्रांति होना जरूरी है और क्रांति तभी संभव हैं जब हर गाँव के किसानों और मजदुरों का संगठन होगा और इसके लिए बवाली सभाओं का आयोजन करता है। लोगों में अन्याय के खिलाफ आवाज उठने की शक्ती निर्माण करने की कोशिश करता हैं।

बुध्दू बवाली को उसके सभा तथा लोगों को दिऐ हुऐ विचारों और संदेशों के बारे में पूछता है, इस पर बवाली कहता है '' चलकर सुनो तो पत्ता चले। मैं उन्हें उनके दुस्मन के बारे में बताता हूँ, मजदूरों का दुस्मन वह है जो मजदुरी कराके कम पैसा देता है और किसानों का दुस्मन है बडा किसान, जो सारा फायदा खुद हडप जाता है।'' [42] इन प्रसंगों के माध्यम से लेखक ने समाज के दो वर्ग शोषक और शोषित का नामोनिशान मिठाने के लिए जनता को अपने हक एवं अधिकारों की प्राप्ति के लिए इकट्ठा होकर लडने का संदेश दिया हैं तथा भविष्य में निर्माण होनेवाले, सामने आनेवाले संकटों एवं समस्याओं के प्रति सचेत करने की कोशिश की है, यह भी कथा अनेक नए - नए तथा अलग विषयों, समस्याओं को ढूँढने में सहायक तथा प्रेरक है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास की अलग - अलग कथाएँ नये - नये विषयों को नये - नये विचारों को, नयी - नयी भाव - भावनाओं को तलाशती रहती हैं।

1.5 कथागत प्रयोग

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी प्रगतिशील विचारधारा के लेखक है, उनके 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में परंपरा से अलग विषयों को तलाशनेवाली प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। उपन्यासकार ने आधुनिक परिस्थितियों से तादात्म्य स्थापित करके नये प्रयोगों को उजागर करने की कोशिश की है। युग - बदलाव, जीवन मूल्यों की टूटन, जीवनविषयक बदलावजन्य धारणाएँ आदि को केंद्र में रखकर परिवर्तित जीवन - सत्य को खोलने के लिए नये - नये प्रयोग किए है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने देश - विदेश की घटनाएँ, राजनीति के नये - नये मोड, जर्जर रूढ़ियाँ, प्रशासन की अनास्था, आदि विभिन्न घटनाओं के विवेचन से उपन्यास में कथागत प्रयोगों की स्थितियों को स्पष्ट किया है, उसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत है। -

प्रस्तुत उपन्यास के एक प्रसंग में नुरू अली अहमद को पाकिस्तान विभाजन के समय देश में निर्माण हुई स्थिति से अवगत करता है, उस समय हिन्दुस्तान में आए सिंधी और बलूची लोगों ने इस भूमी को अपनी जागीरदारी बना के रख दिया। बलूचियों ने तो यहाँ के इलाके में जोर - जबर्दस्ती से लूटपाट की। लोगों में दहशत निर्माण करके, ठगीगिरी करके यहाँ के लोगों का धन, पैसा हडप किया और यहाँ से निकल गए। आज एक भी बलूची व्यक्ति इस इलाके में नजर नहीं आता। लेकिन लोगों में आज भी उनकी भयानक दहशत का साम्राज्य है, इसके संबंध में नुरू कहता है - '' ..... गाँव के बच्चे आज भी 'बलूची' के नाम से डरते है और किसी झोला - डंडावाले अजनबी आदमी को देखकर छिप जाते है।'' [43]

इस घटना के चित्रण से स्वतंत्रता प्राप्ति के समय के हिन्दुस्तानी लोगों की अवस्था का चित्रण कथात्मक रूप से उभरता है, जो कथागत प्रयोग का सुंदर नमुना है।

उपन्यास में अकाल पीडितों की विभिन्न समस्याएँ लेखक ने स्पष्ट कि है। सरकारद्वारा भेजी गई राहतसामग्री लोगों को आसानी से प्राप्त नहीं होती उस समय लोग अँग्रेज अधिकारी हेरटुम का गुनगान करते है, और देसी अधिकारीयों के कामकाज की खिल्लियाँ उडाते हैं। प्रशासन व्यवस्था की ढ़ील पर व्यंग्य करते हुए लोग कहते हैं'' पुराने साहब यानी लॉर्ड हेरटुम होते तो क्या इतनी देर होती ? ये देसी है न, हमी लोगों की तरह अलहदी।'' [44] इस घटना से हमारे देसी अधिकारियों की कार्यप्रणाली का यहाँ लेखक ने यथार्थ दर्शन कराया है, जो उपन्यास की कथा में एक नया प्रयोग बन गया हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित चुनिया की शादी का प्रसंग भी एक अनोखा प्रयोग बनकर उपन्यास में स्थापित हुआ है। कल्लू चुडिहार ने अपनी ही जाती बिरादारी के लडकी से ब्याह किया है इस कारण शब्बीर चुडिहार उसके साथ खाना खाने से इन्कार कर देता है। इस प्रसंग के कारण ग्रामीण समाज में स्थापित विभिन्न रूढियाँ, रीति - रिवाजों के कडे नियमों के कारण एक दुसरे के प्रति देखने की दुषित दृष्टी, तिरस्कार की भावना और उसके कारण बिघडते पारिवारिक संबंध, जीवनमूल्यों की टूटन, सहृदयता का अभाव आदि परिवर्तन सामने आ रहे है। इस बिघडते संबंधों को उजागर करने के लिए लेखक ने कथा में यह एक नया प्रयोग प्रसंग के माध्यम से व्यक्त किया है। जो कथागत प्रयोग का ऊँचा नमुना है।

प्रस्तुत उपन्यास में बांगलादेश के विभाजन की घटना से कथागत प्रयोग को व्यक्त किया है, पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के युद्ध के कारण हिन्दुस्थान में शरणार्थी कैंप खोलकर भागकर आनेवाले लोगों को पनाह दी जाती है। उनके लिए राशन - पानी उपलब्ध किया जाता है। बांगलादेश निर्मिति के बाद भी कई लोग वापस न जाकर हिन्दुस्थान में ही रहना पसंद करते है। बंगालीबाबू हिन्दुस्थान के विषय में अपनी प्रेमभावना व्यक्त करते हुए कहता है - " ..... अम नईं जाएगा अली भाई ..... तुम लोगों शे जो प्रेम मिला है, उसे हम नईं भूला सकता। अम इदरई रहेगा।" [45] इस कथन से रचनाकार अन्य धर्मियों के प्रति भारतीय लोगों की मानवतावादी दृष्टी को उजागर करता है, उन्य देशवासियों के प्रति भारतवासियों में प्रेमभावना तथा मानवतावादी दृष्टिकोण पर्याप्त मात्रा में मिलता है। यहाँ अंर्तराष्ट्रीय हलचलों को लेखक ने कथागत प्रयोग के माध्यम से व्यक्त किया है।

उपन्यास के अंत में वर्णित नसबंदी कार्यक्रम की घटना भी कथागत प्रयोग का ऊँचा नमुना पेश करती है। सरकारी आदेश के अनुसार हर सरकारी कर्मी को नसबंदी करना जरूरी है अथवा तीन लोगों को नसबंदी के लिए प्रेरित करना अनिर्वाय है, परिणामस्वरूप उपन्यास का एक पात्र अशोककुमार पाण्डे अपने मित्र पी. टी. टीचर रमाशंकर पाण्डे के लिए इस आदेश के अनुसार नसबंदी सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं। और शहर जाकर सर्टिफिकेट प्राप्त करते हैं, जिससे पी. टी. टीचर रमाशंकर पाण्डे की तन्ख्वाह फिर से शुरू हो जाती है। यह घटना भी उपन्यास में एक नया प्रयोग बनकर स्थापित हुई है। जिससे तत्कालीन सरकार के विभिन्न कार्यों का चित्र उपन्यास में प्राप्त होता है।

इन सभी घटनाओं से, प्रसंगों से रचनाकार ने उपन्यास में नये - नये प्रयोगों को व्यक्त किया है, जिससे प्रस्तुत उपन्यास में कथागत प्रयोग के यथार्थ दर्शन होते हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में अब्दुल बिस्मिल्लाह के प्रस्तुत उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में अनेक प्रकार के कथागत प्रयोगों के दर्शन होते हैं, इसमें गाँव जीवन के बदलते हुए मुखड़े, ग्रामीण राजनीति, ग्रामीण आर्थिक त्रासदी, सांस्कृतिक पृष्ठभूमी, विविध जाति - बिरादरीयों के विविध व्यवसाय, ग्रामीण जीवन में व्याप्त छोटे - बडे झगडे, सांप्रदायिक फसाद, भारत - पाकिस्तान युध्द, विविध जाति बिरादरियों में संपन्न होनेवाले विवाह - संबंध, आजादी के बाद भारतीय जनजीवन का मोहभंग, अकाल के कारण भारतीय जनजीवन की होनेवाली दुःस्थिती, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, जमींदारों की जनसामान्य पर हावी होने की प्रवृत्ति, नसबंदी जैसे कार्यक्रमों को साकार करने में सरकार की नीति, इससे उत्पन्न कर्मियों की स्थिति आदि अनेक प्रसंगों पर आधारित छोटी - बडी घटनाओं को लेकर लेखक ने अनेक प्रकार के कथागत प्रयोग प्रस्तुत किये है, यह उपन्यास कथागत प्रयोगों का एक ऊँचा नमुना हैं।

समन्वित निष्कर्ष :-

प्रस्तुत उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' में हमने मुख्य कथा, गौण - कथा, कथागत बिखराव, कथागत प्रयोग, अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाओं के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है कि लेखक ने शिल्प की दृष्टि से कथावस्तु के स्तर पर नये - नये प्रयोग किये है। इसमें स्वातंत्र्योत्तर भारत की जनता की खुशियाँ, जमींदारों का जनसामान्यों पर हावी होने का रवैया, सृष्टिनारायण की विविधमुखी मानवी प्रवृत्तियाँ, जाति - बिरादरीवालों की एक - दूसरे से सहायता, अर्थाभाव को पाटने के लिए अमीरों से कर्ज लेने की प्रवृत्ति, अमीरों द्वारा गरीबों की पीटाई, तत्कालीन प्रधानमंत्री से मिलकर अपनी व्यथा का चित्रण करने की वृत्ति, दुर्बल औरतों की इज्जत को लूटने की प्रवृत्ति, धर्मपरिवर्तन की कारणमीमांसा, धार्मिक अस्मिता की रक्षा, स्वतंत्रता के बाद गाँव जीवन तक पहुँचे हुए चुनावों के दृष्परिणाम अकाल पीड़ित जनता की दुःखद स्थिति, विस्थापन की कारणमीमांसा, सांप्रदायिक फसादों का चित्रण, आपसी रिश्तों की जोड - गाँठ के कारण उत्पन्न तान - तनाव, प्रेमपूर्ति में खलल डालने पर प्रेमियों का भागना, चुडिहारों की दुःखद स्थिति, अवैध यौन - संबंध शिक्षा प्रचार - प्रसार के लिए स्कुल की स्थापना भारत - पाक जंग से उत्पन्न परिस्थिति, राजनीतिक गतिविधियों का भारतीय राजनीति पर होनेवाला असर, सरकारी अधिकारियों का भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, आपसी संघर्ष एवं झगडे, गाँव जीवन में घटित हत्याकांड, निरापराधियों की गिरफ्तारी, गाँवो में पुस्तकालय को खोलना, अन्याय अत्याचार के विरोध में विद्रोह आदि गाँव जीवन के अनेक अंगों का चित्रण प्रस्तुत करते हुए लेखक ने गाँव जीवन के बदलनेवाले मुखड़ों को चित्रित किया है।

इसमें विविध गौण - कथाएँ आयी हैं जो तत्कालीन जनजीवन के बदलाओं को स्पष्ट करती हैं। नयी - नयी घटनाएँ एवं प्रसंगोद्वारा लेखक ने नये - नये विषयों को तलाशने का प्रयत्न किया हैं।

इस उपन्यास की कथा में गांधीवादी, मार्क्सवादी, साम्यवादी विचारधारा का समावेश करके लेखक ने अपनी विचारधारा को स्पष्ट किया है। विविध राजनीति के प्रसंगोंद्वारा लेखक ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों पर गहराई से चिंतन किया हैं।

कथावस्तु की दृष्टि से लेखक ने विविध प्रयोगों का चित्रण करते हुए अपनी प्रयोगशीलता का परिचय दिया है। कथावस्तु की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास अत्यंत सफल है।

सार रूप में हम कह सकते है कि -

1) 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में एक मुस्लिम चुड़िहार परिवार की दर्दनाक व्यथा का चित्रण हुआ परिलक्षित होता है।
2) 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का कथानक मौलिक और रोचक है। साथ ही इसमें कथानक की सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं।
3) गौण कथाओं का मुख्य कथा के साथ सुंदर मिलाफ किया गया है। गौण कथाएँ मुख्य कथा को गति देने में सफल सिद्ध हूई है।

4) उपन्यास की कथा का कालखंड विस्तृत होने के कारण अनेक तत्कालिन घटना एवं प्रसंगों का चित्रण हुआ है, जिससे उपन्यास की कथा में कथागत बिखराव दिखाई देता है।

5) प्रस्तुत उपन्यास की कथा किसी विशेष व्यक्ती, गाँव, समुह, जात, धर्म की कथा न होकर सामान्य भारतीय जनमानस की कथा है, जो पूरे भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

6) उपन्यास में अलग विषयों को तलाशनेवाली अनेक प्रासंगिक कथाएँ व्यक्त हुई है, जिससे कथानक में विविधता दिखाई देती है।

7) 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में अनेक अभिनव प्रयोग दिखाई देते है, जिससे कथावस्तु में प्रयोगिकता के दर्शन होते है।

संदर्भ - ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग - १	सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा,	पृष्ठ - 203
2. कुछ विचार,	प्रेमचन्द	पृष्ठ - 85
3. मुखड़ा क्या देखे,	पृष्ठ - 10	
4. वही,	पृष्ठ - 18	
5. वही,	पृष्ठ - 26	
6. वही,	पृष्ठ - 32	
7. वही,	पृष्ठ - 74	
8. बाणभट्ट की आत्मकथा,	हजारीप्रसाद द्विवेदी	पृष्ठ - 13
9. मुखड़ा क्या देखे	पृष्ठ - 104	
10. वही,	पृष्ठ - 123	
11. वही,	पृष्ठ - 126	
12. वही,	पृष्ठ - 157	
13. वही,	पृष्ठ - 179	
14. वही,	पृष्ठ - 207	
15. वही,	पृष्ठ - 219	
16. वही,	पृष्ठ - 234	
17. वही,	पृष्ठ - 85	
18. वही,	पृष्ठ - 95	
19. वही,	पृष्ठ - 95	
20. वही,	पृष्ठ - 85	
21. वही,	पृष्ठ - 85	
22. वही,	पृष्ठ - 93	
23. वही,	पृष्ठ - 173	
24. वही,	पृष्ठ - 244	
25. वही,	पृष्ठ - 244	
26. वही,	पृष्ठ - 70	
27. वही,	पृष्ठ - 84 - 85	
28. वही,	पृष्ठ - 60	
29. वही,	पृष्ठ - 62	
30. वही,	पृष्ठ - 63	
31. वही,	पृष्ठ - 163	
32. वही,	पृष्ठ - 165	
33. वही,	पृष्ठ – 181	

34. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन
    डॉ. क्षितिज धुमाळ पृष्ठ - 291
35. वही, पृष्ठ - 296
36. वही, पृष्ठ - 298
37. मुखड़ा क्या देखे पृष्ठ - 86
38. वही, पृष्ठ - 76
39. वही, पृष्ठ - 123
40. वही, पृष्ठ - 183
41. वही, पृष्ठ - 183
42. वही, पृष्ठ - 212
43. वही, पृष्ठ - 52
44. वही, पृष्ठ - 75
45. वही, पृष्ठ - 180